ऑनलाइन हिंदी शिक्षण

एवरेस्ट मेरी शिखर यात्रा
कक्षा नौंवी

Breakout Room Discussion

- किसी भी लक्ष्य प्राप्ति के लिए आप मनुष्य में किस गुण का होना अनिवार्य मानते हैं और क्यों ?

- प्रकृति में आप किन-किन चीज़ों को देखते हैं?
- भारत के सबसे ऊँचे पर्वत का नाम बताइए।
- हिमालय पर्वत की सबसे ऊँची चोटी कौन-सी है?
- क्या आप किसी पर्वतीय यात्रा पर गए हैं ?

एवरेस्ट : मेरी शिखर यात्रा

बचेंद्री पाल

एवरेस्ट : मेरी शिखर यात्रा

बचेंद्री पाल (१९५४)

माउंट एवरेस्ट को फतह करने वाली पहली भारतीय महिला

"बछेंद्री पाल"

लेखिका परिचय

बछेंद्री पाल वर्तमान उत्तराखंड (तत्कालीन उत्तर प्रदेश) राज्य के उत्तरकाशी के पहाड़ों की गोद में हुआ था.

उत्तराखंड राज्य के एक ग्रामीण परिवार में जन्मी बछेंद्री पाल ने स्नातक की शिक्षा पूर्ण करने के बाद शिक्षक की नौकरी प्राप्त करने के लिए बी. एड. का प्रशिक्षण प्राप्त किया.|

पढ़ाई समाप्त करके वे इंडियन फाउंडेशन दल में शामिल हो गईं|

ट्रेनिंग के दौरान वे 75000 मीटर ऊँची चोटी सफलता पूर्वक चढ़ीं और फिर एवरेस्ट विजय के लिए प्रयास किया |

नाम	बछेंद्री पाल
जन्म स्थान	नाकुरी, उत्तरकाशी, उत्तराखंड
जन्म तारीख	24 मई, 1954
धर्म	हिंदू
निवासी	जमशेदपुर, झारखंड
पिता और माता का नाम	श्री किशन सिंह पाल, श्रीमती हंसा देवी
कुल भाई-बहन	6
पेशा	पर्वतारोही और टाटा स्टील एडवेंचर फाउंडेशन की प्रमुख
एवरेस्ट की चढ़ाई कब की	23 मई, 1984 (30 वर्ष की आयु में)
शैक्षणिक योग्यता	बी.एड, संस्कृत भाषा में एम.ए और नेहरू इंस्टीट्यूट ऑफ माउंटेनियरिंग

उपलब्धियाँ -

1984 पद्म श्री
1985 उत्तर प्रदेश सरकार ,शिक्षा विभाग
1986 अर्जुन पुरस्कार
1997 पी, एच. डी. की मानक उपाधि (गढ़वालविश्वविद्यालय)

बचेंद्री पाल

इनका जन्म सन 24 मई, 1954 को उत्तरांचल के चमोली जिले के बमपा गाँव में हुआ।

अत: बचेंद्री को आठवीं से आगे की पढ़ाई का खर्च सिलाई-कढ़ाई करके जुटाना पड़ा। विषम परिस्थितियों के बावज़ूद बचेंद्री ने संस्कृत में एम.ए. और फिर बी. एड. की शिक्षा हासिल की। बचेंद्री को पहाद्ओं पर चढ़ने शौक़ बचपन से था। पढ़ाई पूरी करके वह एवरेस्ट अभियान - दल में शामिल हो गईं।

एवरेस्ट मेरी शिखर यात्रा

इस कहानी की लेखिका बछेंद्री पाल है ।प्रस्तुत लेख में बचेंद्री पाल ने अपने अभियान का रोमांचकारी वर्णन किया है कि 7 मार्च को एवरेस्ट अभियान दल दिल्ली से काठमांडू के लिए चला।

पाठ - परिचय

लेखिका ने एवेरेस्ट अभियान दल के ७ मार्च को दिल्ली से रवाना होने से लेकर २३ मार्च को एवेरेस्ट विजय तक की घटना को बड़े ही रोमांचक ढंग से क्रमानुसार प्रस्तुत किया है | सभी सहयोगी पात्रों , शेरपा कुलियों के साथ लेखिका बेस से शिखर तक कैसे पहुँची , इसका वर्णन पढ़ते हुए पाठक स्वयं लेखिका के कदम से कदम मिलाते हुए शिखर तक पहुँचने का आनंद प्राप्त करता है |

एवरेस्ट : मेरी शिखर यात्रा

एवरेस्ट अभियान दल 7 मार्च को दिल्ली से काठमांडू के लिए हवाई जहाज़ से चल दिया। एक मज़बूत अग्रिम दल बहुत पहले ही चला गया था जिससे कि वह हमारे 'बेस कैंप' पहुँचने से पहले दुर्गम हिमपात के रास्ते को साफ़ कर सके।

नमचे बाज़ार, शेरपालैंड का एक सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण नगरीय क्षेत्र है। अधिकांश शेरपा इसी स्थान तथा यहीं के आसपास के गाँवों के होते हैं। यह नमचे बाज़ार ही था, जहाँ से मैंने सर्वप्रथम एवरेस्ट को निहारा, जो नेपालियों में 'सागरमाथा' के नाम से प्रसिद्ध है। मुझे यह नाम अच्छा लगा।

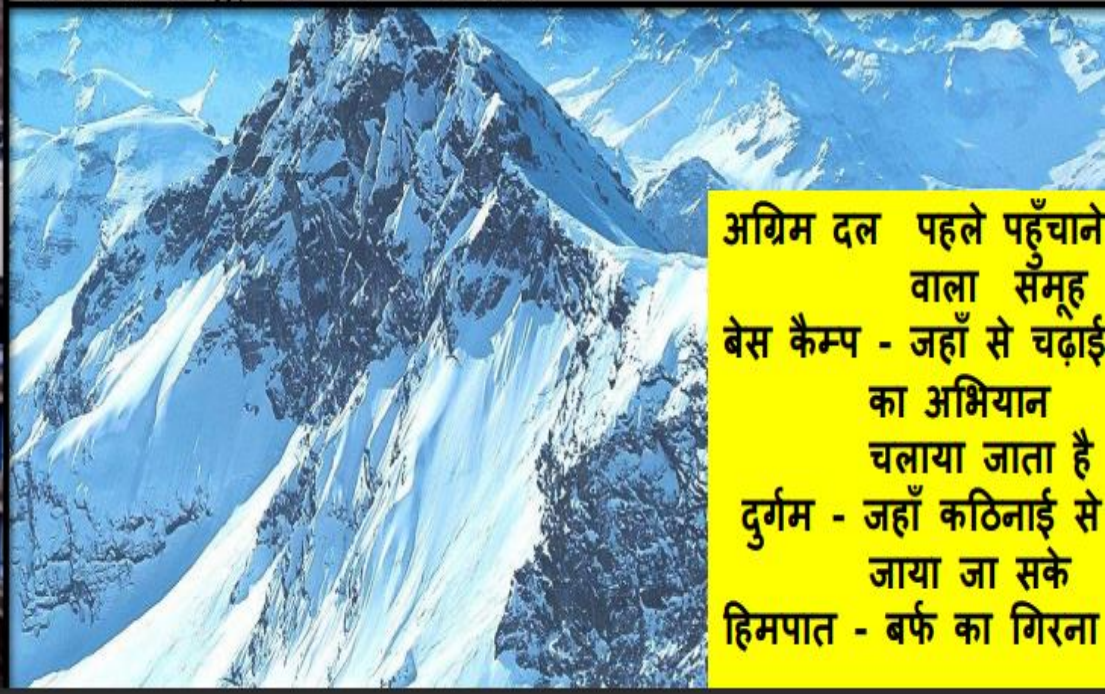

अग्रिम दल पहले पहुँचाने वाला समूह
बेस कैम्प - जहाँ से चढ़ाई का अभियान चलाया जाता है
दुर्गम - जहाँ कठिनाई से जाया जा सके
हिमपात - बर्फ का गिरना

एवरेस्ट की तरफ़ गौर से देखते हुए, मैंने एक भारी बर्फ़ का बड़ा फूल (प्लूम) देखा, जो पर्वत-शिखर पर लहराता एक ध्वज-सा लग रहा था। मुझे बताया गया कि यह दृश्य शिखर की ऊपरी सतह के आसपास 150 किलोमीटर अथवा इससे भी अधिक की गति से हवा चलने के कारण बनता था, क्योंकि तेज़ हवा से सूखा बर्फ़ पर्वत पर उड़ता रहता था। बर्फ़ का यह ध्वज 10 किलोमीटर या इससे भी लंबा हो सकता था। शिखर पर जानेवाले प्रत्येक व्यक्ति को दक्षिण-पूर्वी पहाड़ी पर इन तूफ़ानों को झेलना पड़ता था, विशेषकर खराब मौसम में। यह मुझे डराने के लिए काफ़ी था, फिर भी मैं एवरेस्ट के प्रति विचित्र रूप से आकर्षित थी और इसकी कठिनतम चुनौतियों का सामना करना चाहती थी।

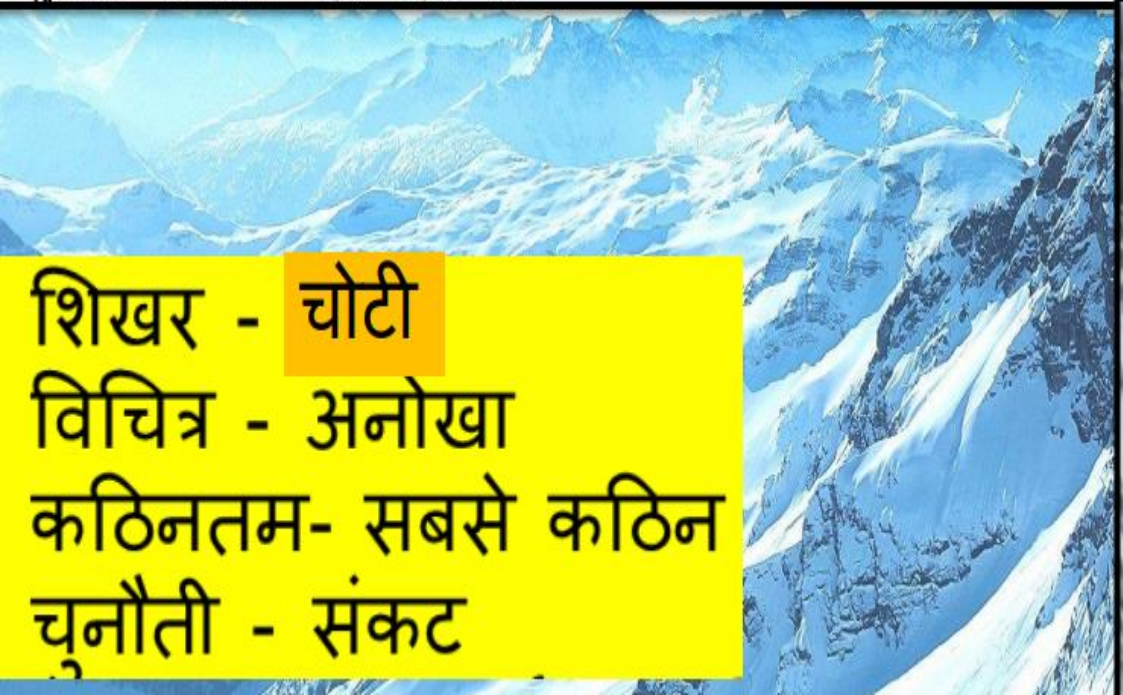

शिखर - चोटी
विचित्र - अनोखा
कठिनतम- सबसे कठिन
चुनौती - संकट

जब हम 26 मार्च को पैरिच पहुँचे, हमें हिम-स्खलन के कारण हुई एक शेरपा कुली की मृत्यु का दु:खद समाचार मिला। खुंभु हिमपात पर जानेवाले अभियान-दल के रास्ते के नीचे खिसक आई थी। सोलह शेरपा कुलियों के दल में से एक की मृत्यु हो गई और चार घायल हो गए थे।

इस समाचार के कारण अभियान दल के सदस्यों के चेहरों पर छाए अवसाद को देखकर हमारे नेता कर्नल खुल्लर ने स्पष्ट किया कि एवरेस्ट जैसे महान अभियान में खतरों को और कभी-कभी तो मृत्यु भी आदमी को सहज भाव से स्वीकार करनी चाहिए।

हिम-स्खलन - बर्फ का गिरना
दुखद - दुख देने वाला
अवसाद - निराशा
सहज- स्वाभाविक

बूझो तो जानें ....

१- अग्रिम दाल का नेतृत्व कौन कर रहा था ?

2- एवरेस्ट पर लेखिका को कौन सा भारी फूल दिखा ?

३-लेखिका को 'सागर माथा' नाम क्यों अच्छा लगा ?

४-हिमस्खलन से कितने लोगों की मृत्यु हुई और कितने घायल हुए ?

५- मृत्यु के अवसाद को लेकर कर्नल खुल्लर ने क्या कहा ?

उपनेता प्रेमचंद, जो अग्रिम दल का नेतृत्व कर रहे थे, 26 मार्च को पैरिच लौट आए। उन्होंने हमारी पहली बड़ी बाधा खुंभु हिमपात की स्थिति से हमें अवगत कराया। उन्होंने कहा कि उनके दल ने कैंप-एक (6000 मी.), जो हिमपात के ठीक ऊपर है, वहाँ तक का रास्ता साफ़ कर दिया है। उन्होंने यह भी बताया कि पुल बनाकर, रस्सियाँ बाँधकर तथा झंडियों से रास्ता चिह्नित कर, सभी बड़ी कठिनाइयों का जायज़ा ले लिया गया है। उन्होंने इस पर भी ध्यान दिलाया कि ग्लेशियर बर्फ़ की नदी है और बर्फ़ का गिरना अभी जारी है। हिमपात में अनियमित और अनिश्चित बदलाव के कारण अभी तक के किए गए सभी काम व्यर्थ हो सकते हैं और हमें रास्ता खोलने का काम दोबारा करना पड़ सकता है।

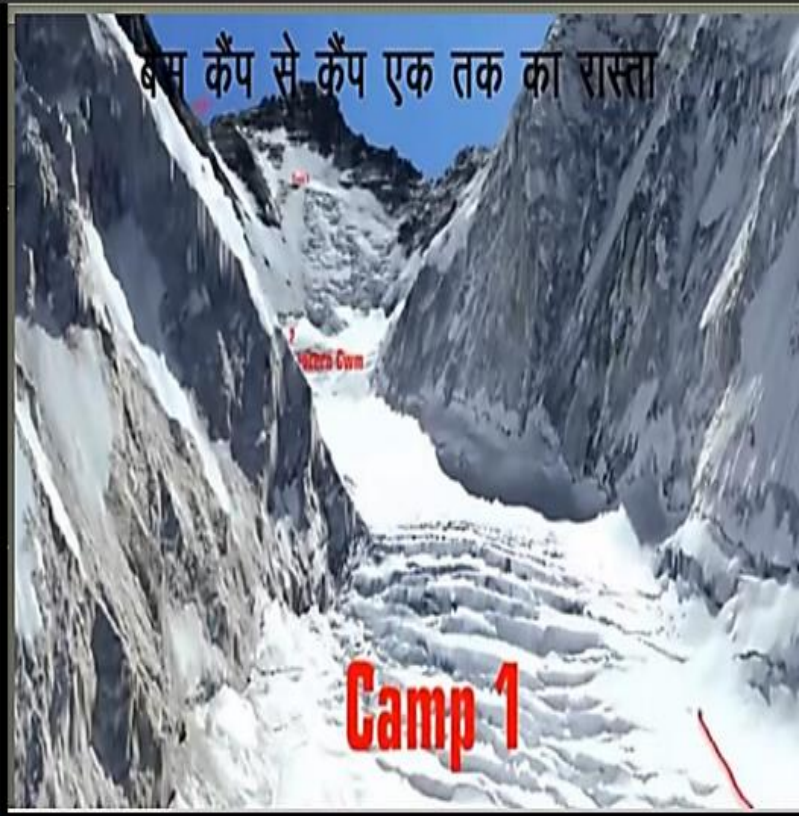

'बेस कैंप' में पहुँचने से पहले हमें एक और मृत्यु की खबर मिली। जलवायु अनुकूल न होने के कारण एक रसोई सहायक की मृत्यु हो गई थी। निश्चित रूप से हम आशाजनक स्थिति में नहीं चल रहे थे।

एवरेस्ट शिखर को मैंने पहले दो बार देखा था, लेकिन एक दूरी से। बेस कैंप पहुँचने पर दूसरे दिन मैंने एवरेस्ट पर्वत तथा इसकी अन्य श्रेणियों को देखा। मैं भौंचक्की होकर खड़ी रह गई और एवरेस्ट, ल्होत्से और नुत्से की ऊँचाइयों से घिरी, बर्फ़ीली टेढ़ी-मेढ़ी नदी को निहारती रही।

हिमपात अपने आपमें एक तरह से बर्फ़ के खंडों का अव्यवस्थित ढंग से गिरना ही था। हमें बताया गया कि ग्लेशियर के बहने से अकसर बर्फ़ में हलचल हो जाती थी, जिससे बड़ी-बड़ी बर्फ़ की चट्टानें तत्काल गिर जाया करती थीं और अन्य कारणों से भी अचानक प्राय: खतरनाक स्थिति धारण कर लेती थीं। सीधे धरातल पर दरार पड़ने का विचार और इस दरार का गहरे-चौड़े हिम-विदर में बदल जाने का मात्र खयाल ही बहुत डरावना था। इससे भी ज़्यादा भयानक इस बात की जानकारी थी कि हमारे संपूर्ण प्रवास के दौरान हिमपात लगभग एक दर्जन आरोहियों और कुलियों को प्रतिदिन छूता रहेगा।

हिमपात - बर्फ का गिरना
शिखर- चोटी
हिम - विदर- बर्फ में दरार पड़ना
प्रवास - बाहर की यात्रा करना

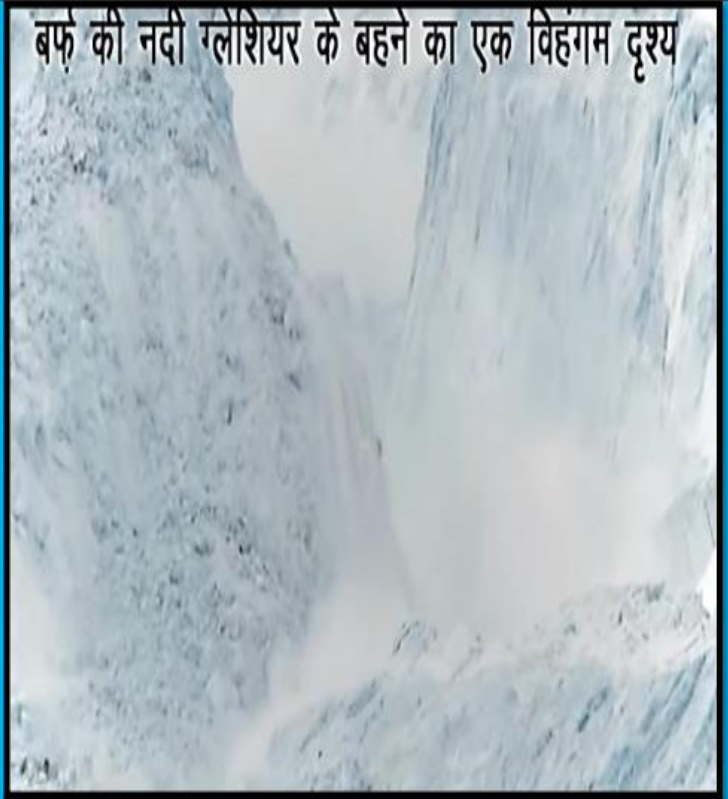

बर्फ़ की नदी ग्लेशियर के बहने का एक विहंगम दृश्य

हिमपात यानि बर्फ के खंडों का अव्यवस्थित रूप से गिरना

दूसरे दिन नए आनेवाले अपने अधिकांश सामान को हम हिमपात के आधे रास्ते तक ले गए। डॉ. मीनू मेहता ने हमें अल्यूमिनियम की सीढ़ियों से अस्थायी पुलों का बनाना, लट्ठों और रस्सियों का उपयोग, बर्फ़ की आड़ी-तिरछी दीवारों पर रस्सियों को बाँधना और हमारे अग्रिम दल के अभियांत्रिकी कार्यों के बारे में हमें विस्तृत जानकारी दी।

तीसरा दिन हिमपात से कैंप-एक तक सामान ढोकर चढ़ाई का अभ्यास करने के लिए निश्चित था। रीता गोंबू तथा मैं साथ-साथ चढ़ रहे थे। हमारे पास एक वॉकी-टॉकी था, जिससे हम अपने हर कदम की जानकारी बेस कैंप पर दे रहे थे। कर्नल खुल्लर उस समय खुश हुए, जब हमने उन्हें अपने पहुँचने की सूचना दी क्योंकि कैंप-एक पर पहुँचनेवाली केवल हम दो ही महिलाएँ थीं।

अंगदोरजी, लोपसांग और गगन बिस्सा अंतत: साउथ कोल पहुँच गए और 29 अप्रैल को 7900 मीटर पर उन्होंने कैंप-चार लगाया। यह संतोषजनक प्रगति थी।

जब अप्रैल में मैं बेस कैंप में थी, तेनजिंग अपनी सबसे छोटी सुपुत्री डेकी के साथ हमारे पास आए थे। उन्होंने इस बात पर विशेष महत्त्व दिया कि दल के प्रत्येक सदस्य और प्रत्येक शेरपा कुली से बातचीत की जाए। जब मेरी बारी आई, मैंने अपना परिचय यह कहकर दिया कि मैं बिलकुल ही नौसिखिया हूँ और एवरेस्ट मेरा पहला अभियान है। तेनजिंग हँसे और मुझसे कहा कि एवरेस्ट उनके लिए भी पहला अभियान है, लेकिन यह भी स्पष्ट किया कि शिखर पर पहुँचने से पहले उन्हें सात बार एवरेस्ट पर जाना पड़ा था। फिर अपना हाथ मेरे कंधे पर रखते हुए उन्होंने कहा, "तुम एक पक्की पर्वतीय लड़की लगती हो। तुम्हें तो शिखर पर पहले ही प्रयास में पहुँच जाना चाहिए।"

15-16 मई 1984 को बुद्ध पूर्णिमा के दिन मैं ल्होत्से की बर्फ़ीली सीधी ढलान पर लगाए गए सुंदर रंगीन नाइलॉन के बने तंबू के कैंप-तीन में थी। कैंप में 10 और व्यक्ति थे। लोपसांग, तशारिंग मेरे तंबू में थे, एन.डी. शेरपा तथा और

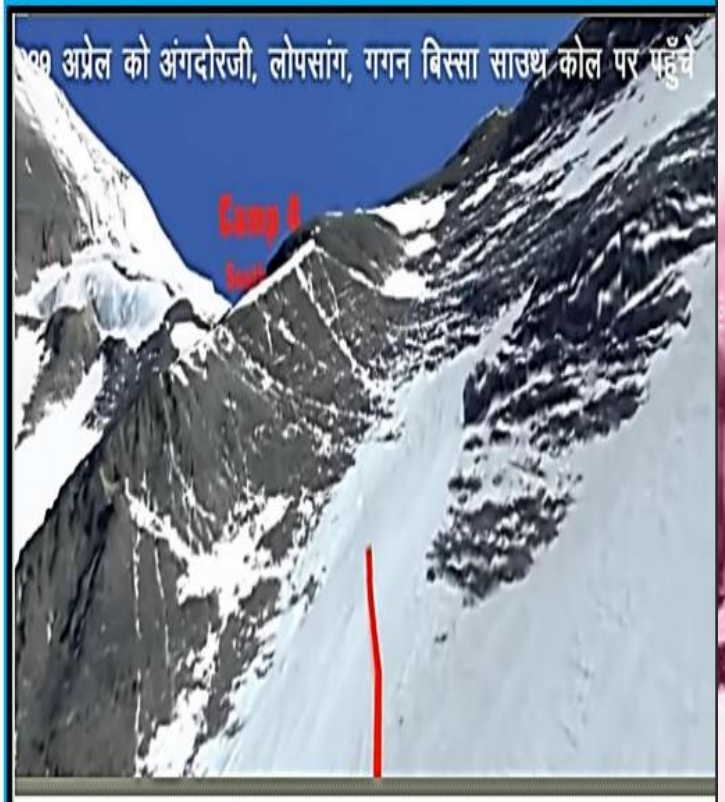

नौसिखिया – अनाड़ी

प्रयास- कोशिश

आठ अन्य शरीर से मज़बूत और ऊँचाइयों में रहनेवाले शेरपा दूसरे तंबुओं में थे। मैं गहरी नींद में सोई हुई थी कि रात में 12.30 बजे के लगभग मेरे सिर के पिछले हिस्से में किसी एक सख्त चीज़ के टकराने से मेरी नींद अचानक खुल गई और साथ ही एक ज़ोरदार धमाका भी हुआ। तभी मुझे महसूस हुआ कि एक ठंडी, बहुत भारी कोई चीज़ मेरे शरीर पर से मुझे कुचलती हुई चल रही है। मुझे साँस लेने में भी कठिनाई हो रही थी।

यह क्या हो गया था? एक लंबा बर्फ़ का पिंड हमारे कैंप के ठीक ऊपर ल्होत्से ग्लेशियर से टूटकर नीचे आ गिरा था और उसका विशाल हिमपुंज बना गया था। हिमखंडों, बर्फ़ के टुकड़ों तथा जमी हुई बर्फ़ के इस विशालकाय पुंज ने, एक एक्सप्रेस रेलगाड़ी की तेज़ गति और भीषण गर्जना के साथ, सीधी ढलान से नीचे आते हुए हमारे कैंप को तहस-नहस कर दिया। वास्तव में हर व्यक्ति को चोट लगी थी। यह एक आश्यर्च था कि किसी की मृत्यु नहीं हुई थी।

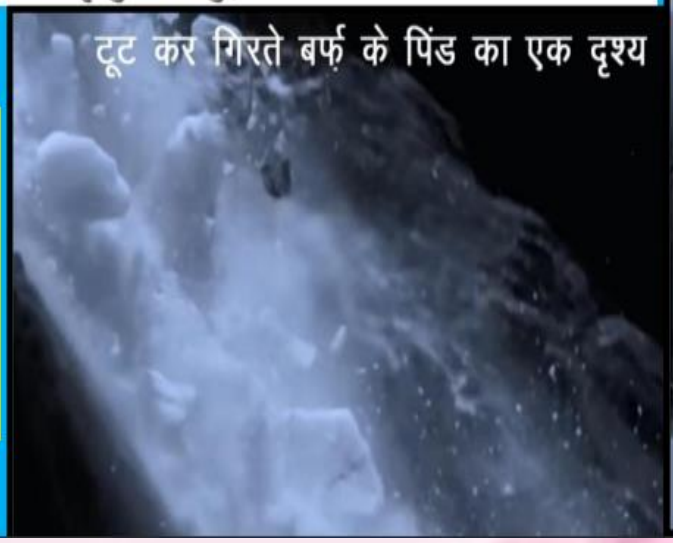

पिंड - टुकड़ा

हिमपुंज – बर्फ का समूह

भीषण गर्जना - भयानक गरज

बूझो तो जानें ....

१ कैंप चार कब और कहाँ लगाया गया ?

२-लेखिका ने शेरपा कुली को अपना परिचय किस तरह दिया ?

३-अस्थायी पुलों को बनाने की जानकारी किसने दी ?

४- शिखर पर पहुँचाने से पहले तेनसिंग जी को कितनी बार एवरेस्ट पर जाना पड़ा?

लोपसांग अपनी स्विस छुरी की मदद से हमारे तंबू का रास्ता साफ़ करने में सफल हो गए थे और तुरंत ही अत्यंत तेज़ी से मुझे बचाने की कोशिश में लग गए। थोड़ी-सी भी देर का सीधा अर्थ था मृत्यु। बड़े-बड़े हिमपिंडों को मुश्किल से हटाते हुए उन्होंने मेरे चारों तरफ़ की कड़े जमे बर्फ़ की खुदाई की और मुझे उस बर्फ़ की कब्र से निकाल बाहर खींच लाने में सफल हो गए।

सुबह तक सारे सुरक्षा दल आ गए थे और 16 मई को प्रात: 8 बजे तक हम प्राय: सभी कैंप-दो पर पहुँच गए थे। जिस शेरपा की टाँग की हड्डी टूट गई थी, उसे एक खुद के बनाए स्ट्रेचर पर लिटाकर नीचे लाए। हमारे नेता कर्नल खुल्लर के शब्दों में, "यह इतनी ऊँचाई पर सुरक्षा-कार्य का एक ज़बरदस्त साहसिक कार्य था।"

सभी नौ पुरुष सदस्यों को चोटों अथवा टूटी हड्डियों आदि के कारण बेस कैंप में भेजना पड़ा। तभी कर्नल खुल्लर मेरी तरफ़ मुड़कर कहने लगे, "क्या तुम भयभीत थीं?"

"जी हाँ।"

"क्या तुम वापिस जाना चाहोगी?"

"नहीं", मैंने बिना किसी हिचकिचाहट के उत्तर दिया।

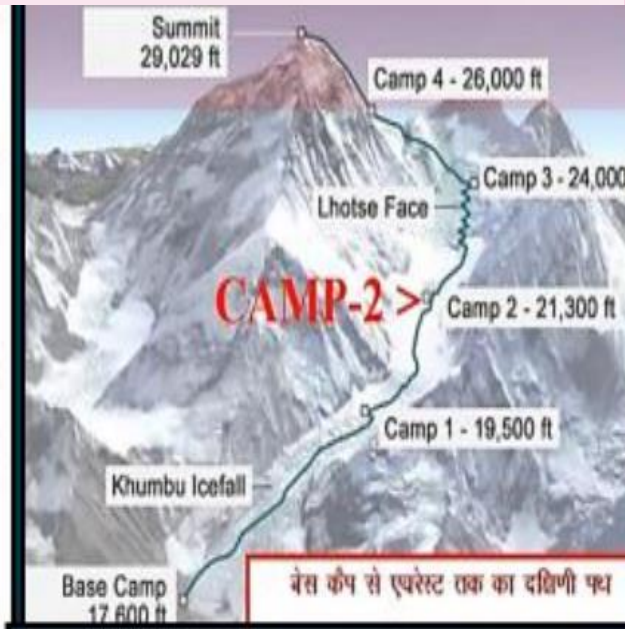

साहसिक - हिम्मत वाला
हिमपिंडों - बर्फ का बड़े गोले या खंड

जैसे ही मैं साउथ कोल कैंप पहुँची, मैंने अगले दिन की अपनी महत्त्वपूर्ण चढ़ाई की तैयारी शुरू कर दी। मैंने खाना, कुकिंग गैस तथा कुछ ऑक्सीजन सिलिंडर इकट्ठे किए। जब दोपहर डेढ़ बजे बिस्सा आया, उसने मुझे चाय के लिए पानी गरम करते देखा। की, जय और मीनू अभी बहुत पीछे थे। मैं चिंतित थी क्योंकि मुझे अगले दिन उनके साथ ही चढ़ाई करनी थी। वे धीरे-धीरे आ रहे थे क्योंकि वे भारी बोझ लेकर और बिना ऑक्सीजन के चल रहे थे।

दोपहर बाद मैंने अपने दल के दूसरे सदस्यों की मदद करने और अपने एक थरमस को जूस से और दूसरे को गरम चाय से भरने के लिए नीचे जाने का निश्चय किया। मैंने बर्फ़ीली हवा में ही तंबू से बाहर कदम रखा। जैसे ही मैं कैंप क्षेत्र से बाहर आ रही थी मेरी मुलाकात मीनू से हुई। की और जय अभी कुछ पीछे थे। मुझे जय जेनेवा स्पर की चोटी के ठीक नीचे मिला। उसने कृतज्ञतापूर्वक चाय वगैरह पी लेकिन मुझे और आगे जाने से रोकने की कोशिश की। मगर मुझे की से भी मिलना था। थोड़ा-सा और आगे नीचे उतरने पर मैंने की को देखा। वह मुझे देखकर हक्का-बक्का रह गया।

"तुमने इतनी बड़ी जोखिम क्यों ली बचेंद्री?"

मैंने उसे दृढ़तापूर्वक कहा, "मैं भी औरों की तरह एक पर्वतारोही हूँ, इसीलिए इस दल में आई हूँ। शारीरिक रूप से मैं ठीक हूँ। इसलिए मुझे अपने दल के सदस्यों की मदद क्यों नहीं करनी चाहिए।" की हँसा और उसने पेय पदार्थ से प्यास बुझाई, लेकिन उसने मुझे अपना किट ले जाने नहीं दिया।

थोड़ी देर बाद साउथ कोल कैंप से ल्हाटू और बिस्सा हमें मिलने नीचे उतर आए। और हम सब साउथ कोल पर जैसी भी सुरक्षा और आराम की जगह उपलब्ध थी, उस पर लौट आए। साउथ कोल 'पृथ्वी पर बहुत अधिक कठोर' जगह के नाम से प्रसिद्ध है।

अगले दिन मैं सुबह चार बजे उठ गई। बर्फ़ पिघलाया और चाय बनाई, कुछ बिस्कुट और आधी चॉकलेट का हलका नाश्ता करने के बाद मैं लगभग साढ़े पाँच बजे अपने तंबू से निकल पड़ी। अंगदोरजी बाहर खड़ा था और कोई आसपास नहीं था।

कृतज्ञतापूर्वक - उपकार मानते हुए
हक्का - बक्का रह जाना - हैरान रह जाना
किट-सारा सामन
जोखिम - खतरा
पर्वतारोही - पर्वत पर चढ़ने वाला
उपलब्ध - प्राप्त

अंगदोरजी बिना ऑक्सीजन के ही चढ़ाई करनेवाला था। लेकिन इसके कारण उसके पैर ठंडे पड़ जाते थे। इसलिए वह ऊँचाई पर लंबे समय तक खुले में और रात्रि में शिखर कैंप पर नहीं जाना चाहता था। इसलिए उसे या तो उसी दिन चोटी तक चढ़कर साउथ कोल पर वापस आ जाना था अथवा अपने प्रयास को छोड़ देना था।

वह तुरंत ही चढ़ाई शुरू करना चाहता था... और उसने मुझसे पूछा, क्या मैं उसके साथ जाना चाहूँगी? एक ही दिन में साउथ कोल से चोटी तक जाना और वापस आना बहुत कठिन और श्रमसाध्य होगा! इसके अलावा यदि अंगदोरजी के पैर ठंडे पड़ गए तो उसके लौटकर आने का भी जोखिम था। मुझे फिर भी अंगदोरजी पर विश्वास था और साथ-साथ मैं आरोहण की क्षमता और कर्मठता के बारे में भी आश्वस्त थी। अन्य कोई भी व्यक्ति इस समय साथ चलने के लिए तैयार नहीं था।

सुबह 6.20 पर जब अंगदोरजी और मैं साउथ कोल से बाहर आ निकले तो दिन ऊपर चढ़ आया था। हलकी-हलकी हवा चल रही थी, लेकिन ठंड भी बहुत अधिक थी। मैं अपने आरोही उपस्कर में काफ़ी सुरक्षित और गरम थी। हमने बगैर रस्सी के ही चढ़ाई की। अंगदोरजी एक निश्चित गति से ऊपर चढ़ते गए और मुझे भी उनके साथ चलने में कोई कठिनाई नहीं हुई।

जमे हुए बर्फ़ की सीधी व ढलाऊ चट्टानें इतनी सख्त और भुरभुरी थीं, मानो शीशे की चादरें बिछी हों। हमें बर्फ़ काटने के फावड़े का इस्तेमाल करना ही पड़ा और मुझे इतनी सख्ती से फावड़ा चलाना पड़ा जिससे कि उस जमे हुए बर्फ़ की धरती को फावड़े के दाँते काट सकें। मैंने उन खतरनाक स्थलों पर हर कदम अच्छी तरह सोच-समझकर उठाया।

दो घंटे से कम समय में ही हम शिखर कैंप पर पहुँच गए। अंगदोरजी ने पीछे मुड़कर देखा और मुझसे कहा कि क्या मैं थक गई हूँ। मैंने जवाब दिया, "नहीं।" जिसे सुनकर वे बहुत अधिक आश्चर्यचकित और आनंदित हुए। उन्होंने कहा कि पहलेवाले दल ने शिखर कैंप पर पहुँचने में चार घंटे लगाए थे और यदि हम इसी गति से चलते रहे तो हम शिखर पर दोपहर एक बजे एक पहुँच जाएँगे।

शिखर कैंप - चोटी पर स्थित अस्थाई निवास
श्रमसाध्य - मेहनत से किया जाने वाला
आरोहण - ऊपर चढ़ना
क्षमता - शक्ति
कर्मठता - काम करने में दृढ़ता
आश्वस्त - भरोसा रखे हुए

एवरेस्ट शंकु की चोटी पर इतनी जगह नहीं थी कि दो व्यक्ति साथ-साथ खड़े हो सकें। चारों तरफ़ हज़ारों मीटर लंबी सीधी ढलान को देखते हुए हमारे सामने प्रश्न सुरक्षा का था। हमने पहले बर्फ़ के फावड़े से बर्फ़ की खुदाई कर अपने आपको सुरक्षित रूप से स्थिर किया। इसके बाद, मैं अपने घुटनों के बल बैठी, बर्फ़ पर अपने माथे को लगाकर मैंने 'सागरमाथे' के ताज का चुंबन लिया। बिना उठे ही मैंने अपने थैले से दुर्गा माँ का चित्र और हनुमान चालीसा निकाला। मैंने इनको अपने साथ लाए लाल कपड़े में लपेटा, छोटी-सी पूजा-अर्चना की और इनको बर्फ़ में दबा दिया। आनंद के इस क्षण में मुझे अपने माता-पिता का ध्यान आया।

जैसे मैं उठी, मैंने अपने हाथ जोड़े और मैं अपने रज्जु-नेता अंगदोरजी के प्रति आदर भाव से झुकी। अंगदोरजी जिन्होंने मुझे प्रोत्साहित किया और मुझे लक्ष्य तक पहुँचाया। मैंने उन्हें बिना ऑक्सीजन के एवरेस्ट की दूसरी चढ़ाई चढ़ने पर बधाई भी दी। उन्होंने मुझे गले से लगाया और मेरे कानों में फुसफुसाया, "दीदी, तुमने अच्छी चढ़ाई की। मैं बहुत प्रसन्न हूँ!"

कुछ देर बाद सोनम पुलजर पहुँचे और उन्होंने फोटो लेने शुरू कर दिए।

इस समय तक ल्हाटू ने हमारे नेता को एवरेस्ट पर हम चारों के होने की सूचना दे दी थी। तब मेरे हाथ में वॉकी-टॉकी दिया गया। कर्नल खुल्लर हमारी सफलता से बहुत प्रसन्न थे। मुझे बधाई देते हुए उन्होंने कहा, "मैं तुम्हारी इस अनूठी उपलब्धि के लिए तुम्हारे माता-पिता को बधाई देना चाहूँगा!" वे बोले कि देश को तुम पर गर्व है और अब तुम ऐसे संसार में वापस जाओगी, जो तुम्हारे अपने पीछे छोड़े हुए संसार से एकदम भिन्न होगा!

शंकु -नुकीला व सबसे ऊपर का भाग

स्थिर- ठहरा हुआ

अर्चना - पूजा

अनूठी - अद्भुत

उपलब्धि - सफलता

आओ जानें .....

प्र १. डॉक्टर मीनू मेहता ने क्या - क्या जानकारी दी ?

प्र २. बेस कैंप में लेखिका से मिलने कौन आया ?

प्र ३. बेस कैंप ३ में क्या दुर्घटना घटी ?

प्र ४. लोपसांग ने लेखिका की क्या सहायता की ?

प्र ५ . किस घटना से पता चलता है कि लेखिका में सहयोग की भावना थी?

ऑक्सीजन मास्क के साथ

एवरेस्ट अभियान दल के पहले अग्रिम दल को क्यों भेजा गया?

एवरेस्ट की इस शिखर यात्रा में लेखिका ने प्रारंभ से ही कई कठिनाइयों का वर्णन किया है। एवरेस्ट का दुर्गम मार्ग निरंतर होने वाले हिमपात से हमेशा ढक जाता था, जिससे वहाँ रास्ता पहचानना मुश्किल हो जाता था। इसलिए अग्रिम दल ने जाकर उन बर्फ को हटाकर झंडियाँ लगा दी ताकि रास्ता आसानी से चिह्नित किया जा सके तथा अन्य कठिनाइयों को भी दूर किया जा सके।

अधिकांश शेरपा इसी स्थान तथा यहीं के आसपास के गाँवों के होते हैं। यह नमचे बाज़ार ही था, जहाँ से मैंने सर्वप्रथम एवरेस्ट को निहारा, जो नेपालियों में 'सागरमाथा' के नाम से प्रसिद्ध है, मुझे यह नाम अच्छा लगा।

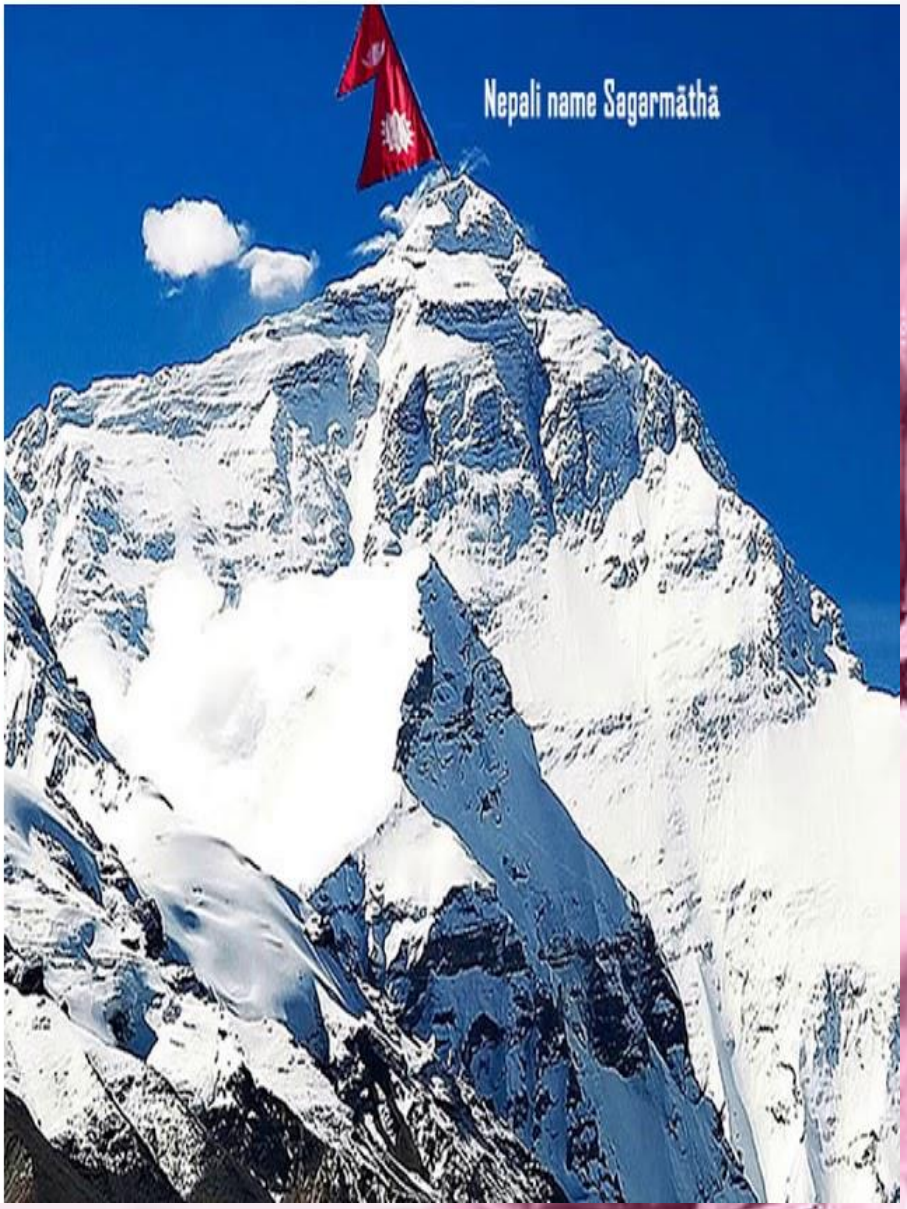

एवरेस्ट पर चढ़ने के लिए कुल 6 कैंप बनाए गए थे।

1. बेस कैंप- यह मुख्य कैंप था।
2. कैंप-1 –यह कैंप 6000 मीटर की ऊँचाई पर बनाया गया। यह हिमपात के ठीक ऊपर था। इसमें सामान जमा था।
3. कैंप-2 –यह चढ़ाई के रास्ते में था।
4. कैंप-3 –इसे ल्होत्से की बर्फ़ीली सीधी ढ़लान पर लगाया गया था। यह रंगीन नायलॉन से बना था। यहीं ल्होत्से ग्लेशियर से टूटकर बर्फ़ पिंड कैंप पर आ गिरा था।
5. कैंप-4 –यह समुद्र तट से 7900 मीटर की ऊँचाई पर था। साउथ कोल स्थान पर लगने के कारण साउथ कोल कैंप कहलाया।
6. शिखर कैंप – यह अंतिम कैंप था। यह एवरेस्ट के ठीक नीचे स्थित था।

पुल बनाकर ,रस्सियां बांधकर झंडियों से रास्ता चिह्नित कर सभी कठिनाइयों का जायज़ा ले लिया गया ।

प्रस्तुत लेख में बचेंद्री पाल ने अपने अभियान का रोमांचकारी वर्णन किया है कि 7 मार्च को एवरेस्ट अभियान दल दिल्ली से काठमांडू के लिए चला। नमचे बाज़ार से लेखिका ने एवरेस्ट को निहारा। लेखिका ने एवरेस्ट पर एक बड़ा भारी बर्फ़ का फूल देखा। यह तेज़ हवा के कारण बनता है। 26 मार्च को अभियान दल पैरिच पहुँचा तो पता चला कि खुंभु हिमपात पर जाने वाले शेरपा कुलियों में से बर्फ़ खिसकने के कारन एक कुली की मृत्यु हो गई और चार लोग घायल हो गए। बेस कैंप पहुँचकर पता चला कि प्रतिकूल जलवायु के कारण एक रसोई सहायक की मृत्यु हो गई है। फिर दल को ज़रुरी प्रशिक्षण दिया गया। 29 अप्रैल को वे 7900 मीटर ऊँचाई पर स्थित बेस कैंप पहुँचे जहाँ तेनजिंग ने लेखिका का हौसला बढ़ाया। 15-16 मई, 1984 को अचानक रात 12:30 बजे कैंप पर ग्लेशियर टूट पड़ा जिससे कैंप तहस-नहस हो गया , हर व्यक्ति चोट-ग्रस्त हुआ। लेखिका बर्फ़ में दब गई थी। उन्हें बर्फ़ से निकाला गया। फिर कुछ दिनों बाद लेखिका साउथकोल कैंप पहुँची। वहाँ उन्होंने पीछे आने वाले साथियों की मदद करके सबको खुश कर दिया। अगले दिन वह प्रात: ही अंगदोरज़ी के साथ शिखर – यात्रा पर निकली। अथक परिश्रम के बाद वे शिखर – कैंप पहुँचे। एक और साथी ल्हाटू के आ जाने से और ऑक्सीजन आपूर्ति बढ़ जाने से चढ़ाई आसान हो गई। 23 मई , 1984 को दोपहर 1:07 बजे लेखिका एवरेस्ट की चोटी पर खड़ी थी। वह एवरेस्त पर चढ़ने वाली पहली भारतीय महिला थी। चोटी पर दो व्यक्तियों के साथ खड़े होने की ज़गह नहीं थी, उन्होंने बर्फ के फावड़े से बर्फ की खुदाई कर अपने आप को सुरक्षित किया। लेखिका ने घुटनों के बल बैठकर 'सागरमाथे' के ताज को चूमा। फिर दुर्गा माँ तथा हनुमान चालीसा को कपडे में लपेटकर बर्फ़ में दबा दिया। अंगदोरज़ी ने उन्हें गले से लगकर बधाई दी। कर्नल खुल्लर ने उन्हें बधाई देते हुए कहा – मैं तुम्हरे मात-पिता को बधाई देना चाहूँगा। देश को तुम पर गर्व है। अब तुम जो नीचे आओगी , तो तुम्हें एक नया संसार देखने को मिलेगा।

EVEREST BASE CAMP
5380 masl

इस पाठ से हमें बचेंद्री पाल की एवरेस्ट फतेह का वर्णन प्राप्त होता है। इससे हमें अपने लक्ष्य की तरफ बढ़ने की प्रेरणा प्राप्त होती है। लेखिका बताती हैं कि 'एवरेस्ट अभियान दल' 7 मार्च 1984 को दिल्ली से काठमांडू के लिए रवाना होता है। उनके दल से आगे एक और दल जा चुका है, 'बेस कैंप' के रास्ते के दुर्गम हिमपात को साफ करेगा।

एवरेस्ट : मेरी शिखर यात्रा
पात्र
→ बचेंद्री पाल
→ कर्नल खुल्लर
→ उपनेता प्रेमचंद
→ अंग
→ मीनू
→ किस्सा
→ की
व्याकरण : —
श्रवण
वाचन
कैंप की संख्या एवं उनका उपभोग
1. बेस कैंप
2. कैंप एक – 6000 मीटर
3. कैम्प दो – प्राथमिक उपचार
4. कैंप तीन – तंबुओं पर हिमखण्ड का गिरना
5. कैंप चार – साउथ कोल (7900 मी० पर
6. शिखर कैंप – अंतिम चढ़ाई।
* वर्ण-विच्छेद का अभ्यास
बचेंद्री पाल की चारित्रिक विशेषताएँ
→ साहसी
→ दृढ़ निश्चयी
→ सहयोगी
→ धार्मिक प्रवृति
→ माता-पिता एवं बड़ों के प्रति सम्मान
→ कर्मनिष्ठ
उद्देश्य
→ महिला सशक्तिकरण की प्रेरणा
→ लक्ष्य के प्रति समर्पण की भावना
गृहकार्य

पाठ का सार

प्रस्तुत लेख में बचेंद्री पाल ने अपने अभियान का रोमांचकारी वर्णन किया है कि 7 मार्च को एवरेस्ट अभियान दल दिल्ली से काठमांडू के लिए चला। नमचे बाज़ार से लेखिका ने एवरेस्ट को निहारा। लेखिका ने एवरेस्ट पर एक बड़ा भारी बर्फ़ का फूल देखा। यह तेज़ हवा के कारण बनता है। 26 मार्च को अभियान दल पैरिच पहुँचा तो पता चला कि खुंभु हिमपात पर जाने वाले शेरपा कुलियों में से बर्फ़ खिसकने के कारन एक कुली की मृत्यु हो गई और चार लोग घायल हो गए। बेस कैंप पहुँचकर पता चला कि प्रतिकूल जलवायु के कारण एक रसोई सहायक की मृत्यु हो गई है। फिर दल को ज़रुरी प्रशिक्षण दिया गया। 29 अप्रैल को वे 7900 मीटर ऊँचाई पर स्थित बेस कैंप पहुँचे जहाँ तेनजिंग ने लेखिका का हौसला बढ़ाया। 15-16 मई, 1984 को अचानक रात 12:30 बजे कैंप पर ग्लेशियर टूट पड़ा जिससे कैंप तहस-नहस हो गया , हर व्यक्ति चोट-ग्रस्त हुआ। लेखिका बर्फ़ में दब गई थी। उन्हें बर्फ़ से निकाला गया। फिर कुछ दिनों बाद लेखिका साउथकोल कैंप पहुँची। वहाँ उन्होंने पीछे आने वाले साथियों की मदद करके सबको खुश कर दिया। अगले दिन वह प्रात: ही अंगदोरज़ी के साथ शिखर – यात्रा पर निकली। अथक परिश्रम के बाद वे शिखर – कैंप पहुँचे।

26 मार्च को अभियान दल पैरिच पहुँचा तो पता चला कि खुंभु हिमपात पर जाने वाले शेरपा कुलियों में से बर्फ़ खिसकने के कारण एक कुली की मृत्यु हो गई और चार लोग घायल हो गए। बेस कैंप पहुँचकर पता चला कि प्रतिकूल जलवायु के कारण एक रसोई सहायक की मृत्यु हो गई है। फिर दल को ज़रूरी प्रशिक्षण दिया गया। 29 अप्रैल को वे 7900 मीटर ऊँचाई पर स्थित बेस कैंप पहुँचे जहाँ तेनजिंग ने लेखिका का हौसला बढ़ाया।

हिमालय की बेटी-बछेंद्री पाल
Bachendri Pal

मित्र 'एवरेस्ट: मेरी शिखर यात्रा' पाठ बचेंद्री पाल द्वारा लिखित है। इस पाठ में लेखिका ने एवरेस्ट पर्वत में अपनी सफलतापूर्वक की गई चढ़ाई का विवरण दिया है। बचेंद्री पाल को भारत की पहली महिला भारतीय पर्वतारोही होने का सम्मान प्राप्त है। अपनी इस रोमांच से भरपूर पर्वतारोहण-यात्रा को लेखिका ने स्वयं ही लिखा है। लेखिका ने एक-एक क्षण को इस पाठ में उतारते हुए, हमारे कौतूहल को बनाए रखने का प्रयास किया है। एवरेस्ट की चढ़ाई करते समय आने वाली कठिनाइयों और एवरेस्ट के वातावरण का सजीव चित्रण इस पाठ में मिलता है। लेखिका ने इस महत्वपूर्ण क्षण का जो विवरण हमें दिया है, वह सच में प्रशंसा के योग्य है। यह ऐसे विवरणों में से एक है जिससे लोगों को ऐसे वातावरण और परिवेश के विषय में जानने का अवसर मिलता है। ऐसे स्थानों के बारे में लोगों को कभी पता नहीं होता। एवरेस्ट ऐसा ही पर्वत है, जिसके विषय में सुना है परन्तु वहां का परिवेश और वातावरण कैसा होगा इस पाठ से सही जानकारी प्राप्त हो जाती है।

माउंट एवरेस्ट (नेपाली:सगरमाथा, संस्कृत:देवगिरि, तिब्बती:चोङ्गमालुङ्गमा) दुनिया की सबसे उंची चोटी है जो ८८४८ मीटर ऊंची है । इसकी उंचाई का सर्वप्रथम पता एक भारतीय गणितज्ञ राधानाथ सिकदर ने १८५२ में लगाया था ।

उस समय सर जॉर्ज एवरेस्ट उन दिनों भारत के सर्वेयर जनरल थे जिनके नाम पर इस चोटी का नाम माउंट एवरेस्ट रख दिया गया, पहले इसे xv के नाम से जाना जाता था । माउंट एवरेस्ट की ऊँचाई उस समय २९,००२ फ़ुट या ८,८४० मीटर मापी गई । वैज्ञानिक सर्वेक्षणों में कहा जाता है कि इसकी ऊंचाई प्रतिवर्ष २ से.मी. के हिसाब से बढ़ रही है । नेपाल में इसे स्थानीय लोग सागरमाथा नाम से जानते हैं ।

हिमनद

- हिमनद पर चलते समय बर्फ की खाईयां सबसे अधिक खतरनाक होती हैं. बर्फ में यह विशाल दरारें अक्सर नज़र नहीं आतीं क्योंकि इन पर बर्फ की एक पतली परत जमने से एक *स्नोब्रिज* सा बन जाता है. कई बार यह स्नोब्रिज केवल कुछ इंच ही मोटे होते हैं. पर्वतारोही रस्सियों की एक प्रणाली का उपयोग कर स्वय को ऐसे खतरों से सुरक्षित रखते हैं. हिमनद यात्रा के लिए बुनियादी रूप में बर्फ की कुल्हाड़ी तथा क्रेम्पोन आवश्यक हैं.

बछेंद्री पाल

- बछेंद्री पाल विश्व की सबसे ऊंची चोटी माउंट एवरेस्ट पर चढने वाली प्रथम भारतीय महिला। 'पहाडों की रानी' बछेंद्री पाल पर्वत शिखर एवरेस्ट की ऊंचाई को छूने वाली दुनिया की 5 वीं महिला पर्वतारोही हैं। उन्होंने यह कारनामा 23 मई 1984 को दिन के 1 बजकर सात मिनट पर किया।

पर्वतारोहण

- **पर्वतारोहण** या **पहाड़ चढ़ना** शब्द का आशय उस खेल, शौक़ अथवा पेशे से है जिसमें पर्वतों पर चढ़ाई, स्कीइंग अथवा सुदूर भ्रमण सम्मिलित हैं. पर्वतारोहण की शुरुआत सदा से अविजित पर्वत शिखरों पर विजय पाने की महत्वाकांक्षा के कारण हुई थी, और समय के साथ इसकी 3 विशेषज्ञता वाली शाखाएं बन कर उभरीं हैं:
- चट्टानों पर चढ़ने की कला,
- बर्फ से ढके पर्वतों पर चढ़ने की कला और
- स्कीइंग की कला.

तीनों में सुरक्षित बने रहने के लिए अनुभव, शारीरिक क्षमता व तकनीकी ज्ञान की आवश्यकता होती है.

उत्तर

उपनेता प्रेमचंद ने अभियान दल के सदस्यों को पहली बड़ी बाधा खुंभु हिमपात की स्थिति से अवगत कराया। उन्होंने यह भी बताया कि उनके दल ने कैंप-एक (6000 मीटर),जो हिमपात के ठीक ऊपर है, वहाँ तक का रास्ता साफ़ कर दिया। उन्होंने यह भी बताया कि पुल बना दिया गया है, रस्सियाँ बाँध दी गई हैं तथा झंडियों से रास्ते को चिह्नित कर दिया गया है। इसके साथ-साथ बड़ी कठिनाइयों का जायजा ले लिया गया है। उन्होंने यह भी बताया कि ग्लेशियर बर्फ़ की नदी है और बर्फ़ का गिरना जारी है। यदि हिमपात अधिक हो गया तो अभी तक किए गए सारे काम व्यर्थ हो सकते हैं।

प्रश्न 2.

हिमपात किस तरह होता है और उससे क्या-क्या परिवर्तन आते हैं?

उत्तर-

बर्फ़ के खंडों का अव्यवस्थित ढंग से गिरना ही हिमपात कहलाता है। ग्लेशियर के बहने से बर्फ में हलचल मच जाती है। इस कारण बर्फ़ की बड़ी-बड़ी चट्टानें तत्काल गिर जाती हैं। इस अवसर पर स्थिति ऐसी खतरनाक हो जाती है कि धरातल पर दरार पड़ने की संभावना बढ़ जाती है। अकसर बर्फ़ में गहरी-चौड़ी दरारें बन जाती हैं। हिमपात से पर्वतारोहियों की कठिनाइयाँ बहुत अधिक बढ़ जाती हैं।

प्रश्न 3.

लेखिका ने तंबू में गिरे बरफ़ पिंड का वर्णन किस तरह किया है?

उत्तर-

लेखिका ने तंबू में गिरे बरफ़ के पिंड का वर्णन करते हुए कहा है कि वह ल्होत्से की बरफ़ीली सीधी ढलान पर लगाए गए नाइलान के तंबू के कैंप-तीन में थी। उसके तंबू में लोपसांग और तशारिंग उसके तंबू में थे। अचानक रात साढ़े बारह बजे उसके सिर में कोई सख्त चीज़ टकराई और उसकी नींद खुल गई। तभी एक जोरदार धमाका हुआ और उसे लगा कि एक ठंडी बहुत भारी चीज़ इसके शरीर को कुचलती चल रही थी। इससे उसे साँस लेने में कठिनाई होने लगी।

प्रश्न 4- की लेखिका को देखकर हक्का-बक्का क्यों रह गया?

उत्तर- की को लेखिका की हिम्मत पर आश्चर्य हो रहा था। लेखिका को अभी ऊपर की चढ़ाई करनी थी लेकिन वह थकान की परवाह किये बिना अन्य साथियों की तलाश में नीचे आ गई थीं। लेखिका ने सबके लिए चाय भी बनाई थी। इसलिए की हक्का बक्का था।

प्रश्न 5- एवरेस्ट पर चढ़ने के लिए कुल कितने कैंप बनाए गए उनका वर्णन कीजिए।

उत्तर- एवरेस्ट पर चढ़ने के लिए कुल 6 कैंप बनाए गये थे जो निम्नलिखित हैं:

बेस कैंप- यह मुख्य कैंप था।

कैंप 1- यह समुद्र से 4000 मी की ऊँचाई पर था। इसमें सामान इकट्ठा किये गये थे।

कैंप 2- यह चढ़ाई के रास्ते में था।

कैंप 3- यह ल्होत्से की सीधी ढ़लान पर था। यहीं पर हिमपिंड लेखिका के तंबू पर गिरा था।

कैंप 4- यह समुद्र तट से 7900 मी की ऊँचाई पर था। इस कैंप को साउथ कोल में लगाया गया था।

शिखर कैंप- यह एवरेस्ट के ठीक नीचे था।

प्रश्न 6- चढ़ाई के समय एवरेस्ट की चोटी की स्थिति कैसी थी?

उत्तर- चारों तरफ बर्फीली हवाएँ चल रही थीं। एवरेस्ट की चोटी की नोक पर इतनी जगह नहीं थी कि दो व्यक्ति साथ-साथ खड़े हो सकें। चारों तरफ हजारों मीटर लंबी सीधी ढलान को देखते हुए उन सभी के सामने प्रश्न अब सुरक्षा का था। उन्होंने पहले बर्फ के फावड़े से बर्फ की खुदाई कर अपने आपको सुरक्षित रूप से खड़ा रहने लायक जगह बनाई।

प्रश्न 7- सम्मिलित अभियान में सहयोग एवं सहायता की भावना का परिचय बचेंद्री के किस कार्य से मिलता है?

उत्तर- बचेंद्री पाल ने कई कार्यों में अपनी सहयोग एवं सहायता की भावना का परिचय दिया है। वे अपने साथियों के लिए खाना और चाय बनाती हैं। वह जितना हो सके सामान ढ़ोती हैं। वह दुर्घटना के बाद भी घबराती नहीं हैं और दूसरों का हौसला बढ़ाती हैं। अन्य पर्वतारोहियों के लाख कहने पर भी वह बीच में से ही वापस आने से साफ मना कर देती हैं।

निम्नलिखित के आशय स्पष्ट कीजिए-

प्रश्न 1- एवरेस्ट जैसे महान अभियान में खतरों को और कभी-कभी तो मृत्यु भी आदमी को सहज भाव से स्वीकार करना चाहिए।

उत्तर- एवरेस्ट जैसे महान अभियान का मौका अधिकतर लोगों को बड़ी मेहनत के बाद भी जीवन में एक बार ही मिलता है। यह अभियान खतरों से भरा होता है। इसमें जान जाने का पूरा अंदेशा रहता है। ऐसे में अगर कोई घबरा जाए तो फिर वह इस अभियान को पूरा करने की हिम्मत खो देगा। एवरेस्ट की चढ़ाई का अर्थ है सीधे मौत के मुँह में कदम रखना।

प्रश्न 2- सीधे धरातल पर दरार पड़ने का विचार और इस दरार का गहरे चौड़े हिम विदर में बदल जाने का मात्र ख़्याल ही बहुत डरावना था। इससे भी ज्यादा भयानक इस बात की जानकारी थी कि हमारे संपूर्ण प्रयास के दौरान हिमपात लगभग एक दर्जन आरोहियों और कुलियों को प्रतिदिन छूता रहेगा।

उत्तर- एवरेस्ट पर चढ़ाई के दौरान कई बार ज़मीन पर दरार पड़ती है और वह दरार चौड़े विदर में बदल जाती है। यह बहुत ही खतरनाक और जानलेवा साबित हो सकता है। प्रतिदिन पर्वतारोहियों के दल के कितने ही लोग हिमपात के शिकार होकर या तो जख्मी हो जाते हैं या अपनी जान से हाथ धो बैठते हैं। यह सब काफी डरावना होता है। पूरे सफर के दौरान बचेंद्री पाल और उनके साथियों को ना जाने ऐसे कितनी कठिनाइयों का सामना करना था।

प्रश्न 3- बिना उठे ही मैंने अपने थैले से दुर्गा माँ का चित्र और हनुमान चालीसा निकाला। मैंने इनको अपने साथ लाए लाल कपड़े में लपेटा, छोटी सी पूजा अर्चना की और इनको बर्फ में गाड़ दिया। आनंद के इस क्षण में मुझे अपने माता पिता का ध्यान आया।

उत्तर- एवरेस्ट पर विजय के बारे में सोचकर ही रोंगटे खड़े हो जाते हैं। यह एक रोमांचकारी और अभूतपूर्व अनुभव होता होगा; ऐसा अनुभव जिसको दोहराना नामुमकिन है। ऐसे में पर्वतारोही के लिए अपनी भावनाओं पर काबू रखना बहुत मुश्किल होता होगा। वह अलग-अलग तरीके से अपनी खुशी जाहिर करता होगा। लेखिका ने अपने आराध्य की पूजा करके और अपने माता-पिता को याद करके उस विजय का जश्न मनाया।

❖ आपके विचार में पर्वतारोही में कौन से गुणों का होना अनिवार्य है?

पर्वतारोही को मानसिक और शारीरिक रूप से दृढ़ होना चाहिए। उसमें खतरों से खेलने का दमखम होना चाहिए। अपनी भूख प्यास एवं भय पर नियंत्रण रखना आना चाहिए। उसमें पर्वतीय क्षेत्र के मौसम और परिस्थितियों के अनुरूप अपने आपको ढालने की क्षमता होनी चाहिए। उसके शरीर में स्फूर्ति होनी चाहिए। उसे संगठित प्रयासों पर भरोसा होना चाहिए।

❖ आप बचेंद्री पाल को अन्य पर्वतारोहियों से किस प्रकार अलग पाते हैं?

बचेंद्री पाल उस भारत भूमि में जन्मीं थीं जहां स्त्रियों को अभी भी कोमलांगी समझा जाता है व जोखिम भरे कार्यों से दूर रखा जाता है। एवरेस्ट की चोटी पर पहुंचना तो दूर की बात उन्हें अक्सर मोहल्ले के बाज़ार तक भी अकेले नहीं जाने दिया जाता। ऐसे वातावरण में पली बढ़ी किसी भी अन्य लड़की की तरह बचेंद्री का पर्वतारोहण करना व एवरेस्ट की चोटी को छूने वाली पहली महिला का गौरव हासिल करना उन्हें अन्य पर्वतारोहियों से अलग सिद्ध करता है।

❖ बचेंद्री पाल में एवरेस्ट की चोटी तक पहुंचने की क्षमता है यह सबसे पहले किसने लक्ष्य किया था?

जब तेनज़िंग अपनी छोटी बेटी के साथ उनके दल से मिलने के लिए कैंप में आए तब बचेंद्री पाल ने उन्हें अपना परिचय देते हुए कहा कि मैं एक नौसिखिया पर्वतारोही हूं और यह मेरा पहला अभियान है। इसके उत्तर में तेनज़िंग ने यह रहस्योद्घाटन किया कि एवरेस्ट उनका भी पहला अभियान था उन्हें शिखर पर पहुंचने से पहले सात बार एवरेस्ट पर जाना पड़ा था। बचेंद्री का हौसला बढ़ाते हुए वे बोले कि तुम एक पक्की पर्वतीय लड़की लगती हो तुम्हें तो शिखर पर पहले प्रयास में पहुंच जाना चाहिए।

❖ एवरेस्ट की यात्रा के दौरान किन लोगों ने लेखिका का किस प्रकार मार्गदर्शन किया?

एवरेस्ट की यात्रा के दौरान कर्नल खुल्लर उपनेता प्रेमचंद डॉ मीनू मेहता साथी अंगदोरज़ी और ल्हाटू ने समय-समय पर लेखिका की सहायता व मार्गदर्शन किया तथा एवरेस्ट विजेता इतिहास पुरूष तेनज़िंग ने उनकी हौसला अफ़्जाई की। अभियान दल के नेता कर्नल खुल्लर ने आरंभ से लेकर अंत तक उनका उत्साहवर्धन किया उन्हें मार्ग में आने वाली भयानक आपदाओं को सहज भाव से स्वीकार करने की प्रेरणा दी। अंगदोरज़ी ने उनकी चढ़ाई करने की योग्यता की प्रशंसा की। ल्हाटू ने नायलॉन की रस्सी से सीधी चढ़ाई पर संतुलन रखते हुए लेखिका की ऑक्सीजन आपूर्ति बढ़ाई।

भाषा अध्यन

1. इस पाठ में प्रयुक्त निम्नलिखित शब्दों की व्याख्या पाठ का संदर्भ देकर कीजिए - निहारा है, धसकना, खिसकना, सागरमाथा, जायज़ा लेना, नौसिखिया

उत्तर

1. निहारा है - यह पाठ एवरेस्ट की चोटी को बचेंद्री पाल ने निहारा है।
2. धसकना-खिसकना - ये दोनों शब्द हिम-खंडो के गिरने के संदर्भ में आए हैं।
3. सागरमाथा - नेपाली एवरेस्ट चोटी को सागरमाथा कहते हैं।
4. जायज़ा लेना - यह शब्द प्रेमचंद ने कैंप के परीक्षण निरीक्षण कर स्थिति के बारे में प्रयुक्त हुआ है।
5. नौसिखिया - बचेंद्री पाल ने तेनजिंग को अपना परिचय देते हुए यह शब्द प्रयुक्त किया है।

2. निम्नलिखित पंक्तियों में उचित विराम चिह्नों का प्रयोग कीजिए -

(क) उन्होंने कहा तुम एक पक्की पर्वतीय लड़की लगती हो तुम्हें तो शिखर पर पहले ही प्रयास में पहुँच जाना चाहिए

(ख) क्या तुम भयभीत थीं

(ग) तुमने इतनी बड़ी जोखिम क्यों ली बचेंद्री

3. नीचे दिए उदाहरण के अनुसार निम्नलिखित शब्द-युग्मों का वाक्य में प्रयोग कीजिए - उदाहरण : हमारे पास एक वॉकी-टॉकी था।

टेढ़ी-मेढ़ी

गहरे-चौड़े

आस-पास

हक्का-बक्का

इधर-उधर

लंबे-चौड़े

उत्तर

टेढ़ी-मेढ़ी - यह पगडंडी बहुत टेढ़ी-मेढ़ी है।

गहरे-चौड़े - वहाँ गहरे-चौड़े गड्ढे थे।

आस-पास - गाँव के आस-पास खेत हैं।

हक्का-बक्का -उसको वहाँ देखकर मैं हक्का-बक्का रह गया।

इधर-उधर - इधर-उधर की बातें करना बंद करो।

लंबे-चौड़े - यहाँ बहुत लंबे-चौड़े मैदान हैं।

पृष्ठ संख्या: 33

4. उदाहरण के अनुसार विलोम शब्द बनाइए - उदाहरण : *अनुकूल - प्रतिकूल*

नियमित -	.....
आरोही -	.....
सुंदर -	.....
विख्यात -	.....
निश्चित -	.....

5. निम्नलिखित शब्दों में उपयुक्त उपसर्ग लगाइए -

जैसे : पुत्र - सुपुत्र

वास व्यवस्थित कूल गति रोहण रक्षित

वास –
व्यवस्थित –
कूल –
गति –
रोहण –
रक्षित –

विभागाध्यक्षा:
डॉ. मधु मिश्रा
दिल्ली पब्लिक स्कूल जामनगर